गौरैया

(कहानी)

4

घर में हम तीन ही व्यक्ति रहते थे– माँ, पिता जी और मैं। हमारे घर के आँगन में एक आम का पेड़ था। तरह-तरह के पक्षी उस पर डेरा डाले रहते थे।

एक दिन दो गौरैया सीधी घर के अंदर घुस आईं। कभी वे किसी रोशनदान पर जा बैठतीं, तो कभी खिड़की पर। फिर जैसे आई थीं, वैसे ही उड़ भी गईं। पर दो दिन बाद हमने क्या देखा कि बैठक की छत से लगे पंखे के गोले में उन्होंने अपना बिछावन बिछा लिया है और मजे से दोनों बैठी गाना गा रही हैं। इस पर पिता जी को गुस्सा आ गया। उन्होंने पंखे के नीचे जाकर जोर से ताली बजाई, बाँहें झुलाईं, फिर खड़े-खड़े कूदने लगे। गौरैयों ने नीचे की ओर झाँककर देखा और एक साथ 'चीं-चीं' करने लगीं।

पिता जी को और भी ज्यादा गुस्सा आ गया। वह बाहर से लाठी उठा लाए। उन्होंने लाठी ऊँची उठाकर पंखे के गोले को ठोंका। 'चीं-चीं' करती गौरैया उड़कर पर्दे के डंडे पर जा बैठीं। पिता जी लाठी उठाए पर्दे की डंडे की ओर लपके। एक गौरैया उड़कर रसोईघर के दरवाजे पर जा बैठी, जबकि दूसरी सीढ़ियों वाले दरवाजे पर।

माँ हँस पड़ीं, "तुम तो बड़े समझदार हो जी, सभी दरवाजे खुले हैं और तुम गौरैया को बाहर निकाल रहे हो। एक दरवाजा खुला छोड़ो, बाकी दरवाजे बंद कर दो। तभी ये निकलेंगी।"

पिता जी ने मुझसे कहा, "जा, दोनों दरवाजे बंद कर दे!"

मैंने भागकर दोनों दरवाजे बंद कर दिए, केवल रसोईघर का दरवाजा खुला रहा।

पिता जी ने फिर लाठी उठाई और गौरैयों पर हमला बोल दिया। 'चीं-चीं' करती चिड़ियाँ रसोईघर के दरवाजे में से बाहर निकल गईं। माँ तालियाँ बजाने लगीं। पिता जी ने लाठी दीवार के साथ टिकाकर रख दी और *छाती फुलाए* कुर्सी पर आ बैठे।

तभी पंखे के ऊपर से 'चीं-चीं' की आवाज सुनाई पड़ी। मैंने सिर उठाकर ऊपर की ओर देखा– दोनों गौरैया फिर से अपने घोंसले में *मौजूद* थीं। इस बार वे रोशनदान में से आ गई थीं, जिसका एक शीशा टूटा हुआ था। पिता जी ने कुर्सी पर चढ़कर रोशनदान में कपड़ा ठूँस दिया और लाठी उठा ली। उस दिन उन्हें गौरैयों को बाहर निकालने में बहुत देर नहीं लगी।

अब तो रोज यही कुछ होने लगा। दिन में तो वे बाहर निकाल दी जातीं, पर रात के समय जब हम सो रहे होते तो न जाने किस रास्ते से वे अंदर घुस आतीं। पिता जी तंग आ गए थे। एक दिन कहने लगे कि यह गौरैयों का घोंसला नोंच कर निकाल देंगे। वह बाहर से स्टूल उठा लाए। उन्होंने पंखे के नीचे फर्श पर स्टूल रखा और लाठी लेकर स्टूल पर चढ़ गए। अब पिता जी लाठी का सिरा घास के तिनकों के ऊपर रखकर वहीं रखे-रखे घुमाने लगे। इससे घोंसले के लंबे-लंबे तिनके लाठी के सिरे के साथ लिपटने लगे। तभी सहसा जोर की आवाज आई, "चीं-चीं..... चीं-चीं!"

पिता जी के हाथ ठिठक गए। मैंने झट-से बाहर की ओर देखा। दोनों गौरैयाँ बाहर दीवार पर गुमसुम बैठी थीं। फिर पंखे की ओर देखा। पंखे के गोले के ऊपर से दो नन्हीं-नन्हीं गौरैयाँ 'चीं-चीं' किए जा रही थीं।

मानों वे अपना परिचय दे रही थीं– "हम आ गई हैं.... हमारे माँ-बाप कहाँ हैं?"

मैं *अवाक्* उनकी ओर देखता रहा। फिर मैंने देखा कि पिता जी स्टूल से नीचे उतर आए और चुपचाप कुर्सी पर आकर बैठ गए। इस बीच माँ ने सभी दरवाजे खोल दिए।

उनके माँ-बाप झट से उड़कर अंदर आ गए और 'चीं-चीं' करते उनसे जा मिले। मादा गौरैया उनकी नन्हीं-नन्हीं चोंचों में *चुग्गा* डालने लगी। कमरे में फिर से शोर होने लगा था– पर इस बार पिता जी उनकी ओर देख-देखकर केवल मुस्कुराते रहे।

–भीष्म साहनी

शब्द-अर्थ

छाती फुलाए – गर्व करते हुए *(feeling pride)*,
मौजूद – उपस्थित *(present)*,
अवाक् – हैरान *(surprised)*,
चुग्गा – पक्षियों के खाने का दाना *(birds' food)*।

अभ्यास

मौखिक

1. इन शब्दों को पढ़कर सुनाइए–

गौरैया	गुस्सा	बाँहें	तालियाँ	ठूँस
स्टूल	चुग्गा	छाती फुलाए	मौजूद	अवाक्

2. निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) घर में कितने व्यक्ति रहते थे?
(ख) घर के आँगन में किस चीज का पेड़ था?
(ग) एक दिन घर में कौन घुस आई?
(घ) लेखक ने किसका दरवाजा खुला छोड़ दिया?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) घर के आँगन में पेड़ था–

☐ इमली का ☐ आम का ☐ नीम का

(ख) गौरैया कर रही थीं–

☐ चूँ-चूँ ☐ चीं-चीं ☐ कूँ-कूँ

(ग) गौरैया को भगा-भगाकर पिताजी—

☐ तंग आ गए थे ☐ खुश हो रहे थे ☐ बैठ रहे थे

(घ) गौरैया को भगाने में पिताजी—

☐ असफल रहे ☐ सफल रहे ☐ इनमें से कोई नहीं

2. वाक्यों को पूरा कीजिए—

(क) तरह-तरह के ..... उस पर डेरा डाले रहते थे।

(ख) पिताजी को और ज्यादा ..... आ गया।

(ग) मैंने भागकर दोनों ..... बंद कर दिए।

(घ) दोनों गौरैया फिर से अपने ..... में मौजूद थीं।

(ङ) दोनों गौरेया बाहर दीवार पर ..... थीं।

3. सही वाक्यों के सामने (✓) तथा गलत वाक्यों के सामने (✗) का निशान लगाइए—

(क) घर में चार व्यक्ति रहते थे। ☐

(ख) घर के आँगन में नीम का पेड़ था। ☐

(ग) एक दिन दो गौरैया घर के अंदर घुस आईं। ☐

(घ) उनके माँ-बाप झट से उड़कर अंदर आ गए। ☐

(ङ) नर गौरैया उन्हें चुग्गा देने लगा। ☐

4. किसने कहा?

(क) "हम आ गई हैं। हमारे माँ-बाप कहाँ हैं?" .....

(ख) "जा, दोनों दरवाजे बंद कर दे।" .....

(ग) "तुम तो बड़े समझदार हो जी।" .....

5. शब्दों को उनके अर्थों से मिलाइए—

शब्द	अर्थ
(क) अवाक्	(i) उपस्थित
(ख) चुग्गा	(ii) घोंसला
(ग) मौजूद	(iii) परेशान
(घ) नीड़	(iv) पक्षियों के खाने का दाना
(ङ) तंग	(v) छोटी
(च) नन्हीं	(vi) हैरान

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) इस कहानी के रचयिता कौन हैं?

(ख) गौरैया ने अपना बिछावन कहाँ बिछाया?

(ग) प्रारंभ में पिताजी को गौरैया भगाने में कितनी देर लगी?

(घ) नन्हीं गौरैया की चोचों में मादा गौरैया ने क्या डाला?

भाषा-ज्ञान

1. समझकर लिखिए–

(क) चहचहाना — चहचहाहट (ख) फड़फड़ाना — ....

(ग) मुस्कराना — .... (घ) थरथराना — ....

2. निम्न में से बेमेल शब्दों पर (✗) का निशान लगाइए–

(क)	स्टूल,	कुर्सी,	मेज,	पटरा
(ख)	सुबह,	सवेरे,	प्रातः,	सायं
(ग)	तोता,	मैना,	घोड़ा,	कोयल
(घ)	माँ,	पिता,	भाई,	मामा

3. पढ़िए और समझिए–

(क)	मौजूद	—	उपस्थित,	हाजिर
(ख)	पिता	—	बाप,	पापा
(ग)	माँ	—	माता,	मम्मी
(घ)	घर	—	गृह,	निवास

क्रियात्मक गतिविधि

- आजकल गौरैया बहुत कम दिखाई देती हैं। इसका क्या कारण है? पता करके लिखिए।

....

....

....

- अपने पसंद के किसी पक्षी का चित्र बनाकर उसमें रंग भरिए।
- यदि आप लेखक के स्थान पर होते, तो क्या करते? बताइए।